E Content for students of Patliputra University

B.A(Hons),Part-1, Paper 1

Subject- Philosophy

Title/Heading of Topic-"वैशेषिक दर्शन में समवाय (Inherence) पदार्थ"

डॉ. राज नारायण सिंह

सहायक प्राध्यापक, दर्शनशात्र विभाग, राम रतन सिंह महाविद्यालय मोकामा, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय

समवाय एक प्रकार का सम्बन्ध है। समवाय वह सम्बन्ध है जिसके कारण दो पदार्थ एक दूसरे में समवेत रहते हैं। यह सम्बन्ध अयुत्तसिद्ध वस्तुओं के बीच होता है। अयुत्त-सिद्ध वस्तुएँ वे हैं जिनका अस्तित्व नहीं रह सकता। उदाहरणस्वरुप, गुण और द्रव्य, कर्म और द्रव्य, सामान्य और व्यक्ति, पृथक् अवयवी (whole) और अवयव (part) अयुत-सिद्ध वस्तुएँ हैं। इन्हीं वस्तुओं के बीच, अर्थात् गुण और द्रव्य, कर्म और द्रव्य, सामान्य और व्यक्ति के बीच, समवाय सम्बन्ध विद्यमान रहता है। धागों, और कपड़े के बीच, गुलाब के फूल और सुगन्ध के बीच जो संबंध है वह समवाय सम्बन्ध का परिचायक है। समवाय संबंध नित्य होता है। कुर्सी और उसके अवयवों के बीच जो सम्बन्ध है वह नित्य है। कर्म की उत्पत्ति के पूर्व और नाश के बाद भी अवयव विद्यमान रहते हैं। समवाय एक ही होता है। उसके विपरीत विशेष अनेक होते हैं। प्रभाकर- मीमांसा में समवाय अनेक माने गये हैं। प्रभाकर के मतानुसार नित्य वस्तुओं का समवाय नित्य और अनित्य वस्तुओं का समवाय अनित्य होता है परन्तु न्याय-वैशेषिक में एक ही नित्य समवाय माना गया है। समवाय अदृश्य है। इसका ज्ञान अनुमान से प्राप्य है।

वैशेषिक के मतानुसार समवाय का ज्ञान प्रत्यक्ष से संभव नहीं है। वैशेषिक के समवाय-सम्बन्ध के इस पक्ष की व्याख्या करते हुए डॉ. राधाकृष्णन ने कहा है कि "समवाय-सम्बन्ध का प्रत्यक्ष नहीं हो सकता, किन्तु वस्तुओं के पृथक् न हो सकने वाले सम्बन्ध से इसका केवल अनुमान किया जा सकता है", न्याय, इसके विपरीत, समवाय का ज्ञान प्रत्यक्ष से मानता है।

समवाय को अच्छी तरह समझने के लिये वैशेषिक द्वारा प्रमाणित दूसरे सम्बन्ध-संयोग-पर विचार करना परमावश्यक है। संयोग और

समवाय वैशेषिक के मतानुसार दो प्रकार के सम्बन्ध हैं। संयोग एक अनित्य सम्बन्ध है।

पृथक्-पृथक् वस्तुओं का कुछ काल के लिये परस्पर मिलने से जो सम्बन्ध होता है, उसे 'संयोग' (Conjunction) कहा जाता है। उदाहरणस्वरूप, पक्षी वृक्ष की डाल पर आकर बैठता है। उसके बैठने से वृक्ष की डाल और पक्षी के बीच जो सम्बन्ध होता है उसे 'संयोग' कहा जाता है। यह सम्बन्ध अनायास हो जाता है। कुछ काल के बाद यह सम्बन्ध टूट भी सकता है। इसीलिये इसे अनित्य सम्बन्ध कहा गया है।

यद्यपि समवाय और संयोग दोनों सम्बन्ध हैं फिर भी दोनों के बीच अनेक विभिन्नताएँ हैं। ये विभिन्नताएँ संयोग और समवाय के स्वरुप को पूर्णत:स्पष्ट करने में सफल हैं। इसलिये इन विभिन्नताओं की महत्ता अधिक बढ़ गई है। अब इनकी चर्चा अपेक्षित है।

(१) वैशेषिक दर्शन में संयोग को एक स्वतंत्र पदार्थ के रुप नहीं माना गया है। गुण एक स्वतन्त्र पदार्थ है। गुण चौबीस प्रकार के होते हैं। उन चौबीस प्रकार के गुणों में 'संयोग' भी एक प्रकार का गुण है। परन्तु समवाय को वैशेषिक ने एक स्वतन्त्र पदार्थ के रुप में माना है। यह छठा भावात्मक पदार्थ है।

(२) संयोग अनित्य (temporary) सम्बन्ध है। दो पृथक्-पृथक् वस्तुओं के संयुक्त होने से 'संयोग' सम्बन्ध होता है। रेलगाड़ी और प्लेटफार्म के बीच जो सम्बन्ध होता है, वही संयोग है यह सम्बन्ध अल्पकाल तक ही कायम रहता है। रेलगाड़ी ज्यों ही प्लेटफार्म से पृथक होती है, यह सम्बन्ध दूर हो जाता है। इस सम्बन्ध का आरम्भ और अन्त सम्भव है। इसके विपरीत समवाय नित्य (etermal) सम्बन्ध है। यह ऐसी वस्तुओं के बीच विद्यमान होता है जो अयुतसिद्ध हैं। उदाहरणस्वरुप, द्रव्य और गुण के बीच जो सम्बन्ध है वह शाश्वत है। इसी प्रकार मनुष्य और मनुष्यत्व के बीच जो समवाय सम्बन्ध है वह भी नित्य है।

(३) संयोग आकस्मिक सम्बन्ध (accidental relation) है। यदि दो प्रतिकूल दिशाओं से दो गेंदें आकर एक दूसरी से मिलती हैं तो उनके मिलन से उत्पन्न सम्बन्ध संयोग है। दोनों गेंदों का मिलन अकस्मात् कहा जाता है। एक गेन्द के अभाव में भी दूसरी गेंद की सत्ता विद्यमान रहती है। संयोग को संयुक्त वस्तुओं का आकस्मिक गुण कहा जाता है। संयुक्त वस्तुओं का विभाग (वियोग) होने पर संयोग नष्ट हो जाता है।

इसके विपरीत समवाय दो वस्तुओं का आवश्यक सम्बन्ध (essential relation) है। गुलाब और गुलाब की सुगन्ध के बीच जो

सम्बन्ध है वह आवश्यक है। यह सम्बन्ध वस्तु के स्वरूप का निर्धारण करता है। यह सम्बन्ध चीजों को बिना विध्वंस किये परस्पर अलग नहीं किया जा सकता है।

(४) संयोग सम्बन्ध के लिये कर्म आवश्यक है। दो संयुक्त चीजों में क्रियाशीलता दिखती है। वृक्ष और पक्षी के बीच संयोग सम्बन्ध है। इस उदाहरण में दो संयुक्त वस्तुओं में सें एक, पक्षी क्रियाशील एवं गतिशील है। जब दो विपरीत दिशाओं से आती हुई गेंदें संयुक्त होती हैं तो वहाँ दोनों वस्तुओं में गति दिख पड़ती है।

परन्तु समवाय सम्बन्ध में इस तरह की बात नहीं है। इस सम्बन्ध में गति की अपेक्षा नहीं है। इस विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि संयोग के लिये कर्म की आवश्यकता है परन्तु समवाय कर्म पर आश्रित नहीं है।

(५) संयोग का सम्बन्ध पारस्परिक होता है। उदाहरण स्वरूप हाथ और कलम के संयुक्त होने पर संयोग सम्बन्ध होता है। वहाँ हाथ कलम से संयुक्त है और कलम भी हाथ से संयुक्त है परन्तु समवाय के सम्बन्ध में यह बात नहीं होती। उदाहरणस्वरूप- गुण, द्रव्य में समवेत होता है, द्रव्य गुण में नहीं रहता है।

(६) संयोग बाह्य-सम्बन्ध है। फूल और भौंरे के बीच जो सम्बन्ध होता है, वह 'संयोग' कहलाता है। इस सम्बन्ध में संयोग की चीजें एक दूसरे से अलग रह सकती हैं। फूल की सत्ता भी भौरों से अलग है तथा भौंरों की सत्ता भी फूल से अलग रह सकती है। बाह्य सम्बन्ध उस सम्बन्ध को कहा जाता है जिसके द्वारा सम्बन्धित वस्तुएँ एक दूसरे से अलग रह सकती हैं।

समवाय को कुछ विद्वानों ने आन्तरिक सम्बन्ध (internal relation) कहा है। डॉ० राधाकृष्णन् ने समवाय को आन्तरिक सम्बन्ध कहा है 'संयोग' बाह्य सम्बन्ध है, परन्तु समवाय आन्तरिक है .....समवाय वस्तुओं को सच्चा एकत्व प्रस्तुत करता है।

समवाय को आन्तरिक सम्बन्ध कहना युक्तियुक्त नहीं है। आन्तरिक सम्बन्ध उस संबंध को कहते हैं जो सम्बन्धित वस्तुओं को स्वभाव का अंग रहता है। आन्तरिक सम्बन्ध में सम्बन्धित वस्तुओं को एक दूसरे से अलग करना असम्भव है । परन्तु समवाय में यह विशेषता नहीं पायी जाती है। उदाहरणस्वरुप गुण द्रव्य के बिना नहीं रह सकता है, परन्तु द्रव्य गुण के बिना रह सकता है। कर्म द्रव्य के बिना नहीं रहता है। परन्तु द्रव्य कर्म के बिना रह सकता है। व्यक्ति सामान्य से अलग नहीं रह सकता है, परन्तु सामान्य व्यक्ति से अलग रह सकता है। अत: समवाय सम्बन्ध में दोनों सम्बन्धित चीजें

एक दूसरे पर आश्रित नहीं है। इसलिए प्रो हरियन्ना ने समवाय सम्बन्ध को बाह्य सम्बन्ध कहा है।

वैशेषिक दर्शन में समवाय को एक स्वतंत्र पदार्थ माना गया है। वैशेषिक का तर्क है कि यदि द्रव्य वास्तविक है, और गुण वास्तविक है तो दोनों का सम्बन्ध समवाय भी वास्तविक ही है। यदि व्यक्ति और सामान्य दोनों वास्तविक हैं सब व्यक्ति और सामान्य का सम्बन्ध-समवाय भी वास्तविक है। अत: समवाय को एक स्वतंत्र पदार्थ मानना न्याय संगत है।

----------(०)----------